

मुरिया जनजाति

स्रोत: द हिंदू

- आंध्र प्रदेश व छत्तीसगढ़ के बीच सीमावर्ती क्षेत्रों में नविस करने वाली **मुरिया/मुड़िया जनजाति** के पास दोनों राज्यों से प्राप्त मतदाता कार्ड हैं, एक उनके मताधिकार का प्रयोग करने के लिये है एवं दूसरा उनके जन्म के संदर्भ और प्रमाण के लिये।
- यह बस्ती **नक्सलवाद** से प्रभावित आंध्र प्रदेश-छत्तीसगढ़ सीमा पर 'भारत के **रेड कॉरिडोर**' के भीतर स्थित है जो आरक्षित वन के भीतर स्थित एक मरूस्थान (Oasis) है तथा यह बस्ती और नरिनीकरण पर प्रतिबंध लगाने वाले सख्त कानूनों द्वारा संरक्षित है।
- मुरिया नविस स्थान को **आंतरिक रूप से वसिथापित लोगों (IDPs)** के घर के रूप में जाना जाता है, जिनकी आबादी आंध्र प्रदेश में लगभग 6,600 है और यहाँ के मुरियाओं को मूल जनजातियों द्वारा '**गुट्टी कोया**' कहा जाता है।
- यह जनजाति **माओवादियों** और **सलवा जुद्ध** के बीच संघर्ष के दौरान वसिथापित हुई थी।
 - सलवा जुद्ध गैरकानूनी सशस्त्र नक्सलियों के खिलाफ प्रतिरोध के लिये संगठित जनजातीय व्यक्तियों का एक समूह है।
 - कथित तौर पर इस समूह को छत्तीसगढ़ में सरकारी मशीनरी का समर्थन प्राप्त था।
- **मुरिया** भारत के छत्तीसगढ़ के बस्तर ज़िले का एक मूल **आदिवासी**, अनुसूचित जनजाति **दरवड़ि** समुदाय है। वे **गोंडी** समुदाय का हिस्सा हैं।
 - वे कोया (एक दरवड़ि) भाषा बोलते हैं।
 - उनका विवाह और समग्र जीवन के प्रतिप्रगतिशील दृष्टिकोण है।

और पढ़ें: [मुरिया जनजाति](#)